ज्योतिर्गमय

संस्कृतनिष्ठ बाल-मासिक पत्रिका

विषय: चैत्र शुक्ल प्रतिपदा / विक्रम संवत् की भारतीय परम्परा

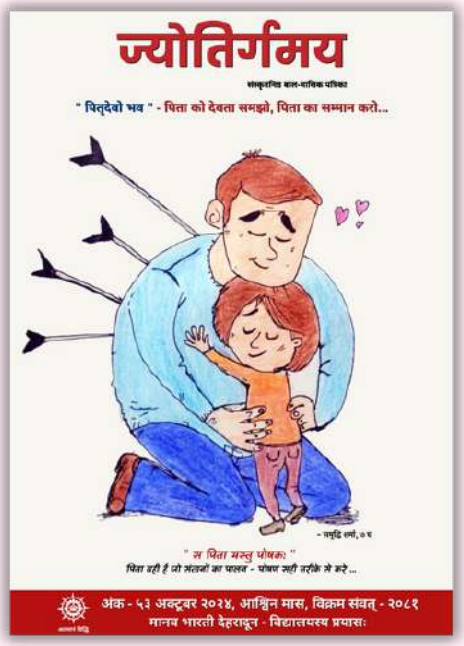

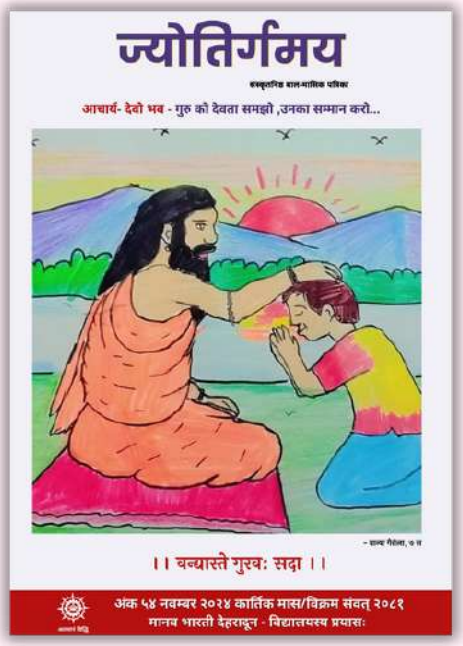

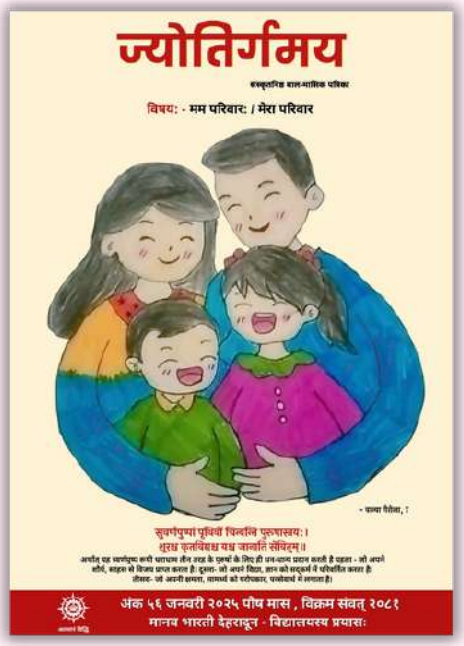

शुभं भवतु भारतीयं नव-वर्षम् {विक्रम संवत २०८२}

नवप्रकाशं नवचैतन्यं नवहर्षं नवसामर्थ्यम् ।
आयातु नववर्षमेतद् गृहीत्वा नवमाङ्गल्यम् ।।

यह भारतीय नववर्ष (विक्रम संवत २०८२) नया प्रकाश, नया चैतन्य, नया हर्ष,
नया सामर्थ्य और नया मांगल्य लाए। आप सब का सदा मंगल हो...।

आत्मानं विद्धि

अंक ५९ अप्रैल २०२५ चैत्र मास , विक्रम संवत् २०८२
मानव भारती देहरादून - विद्यालयस्य प्रयासः

स्यात् सुखमयं मम भारतम् .....।

हिंदू नववर्ष के साथ विक्रम संवत का नया साल शुरू होता है। इस तिथि को युगादि तिथि भी कहा जाता है। ऐसा माना जाता है कि इस दिन से सतयुग और देवी शक्ति की पूजा की शुरुआत हुई थी। हर साल हिंदू नववर्ष में कई महत्वपूर्ण व्रत और पर्व मनाए जाते हैं, जिनका विशेष महत्व है। पंचांग के अनुसार, चैत्र महीने की शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि की शुरुआत २९ मार्च को शाम ०४ बजकर २७ मिनट पर पर होगी और तिथि का समापन ३० मार्च को दोपहर १२ बजकर ४९ मिनट पर होगा। ऐसे में चैत्र नवरात्र की शुरुआत ३० मार्च से होगी और समापन ०७ अप्रैल को होगा। हिंदू नववर्ष के अवसर पर मानव के अलावा प्रकृति भी नववर्ष का स्वागत कर रही होती है। इस दौरान ऋतुराज वसंत प्रकृति को अपने गोद में ले चुके होते हैं। हिंदू धर्म से जुड़े लोग हिंदू नववर्ष को बेहद उत्साह के साथ मनाते हैं। हिंदू नववर्ष का पहला पर्व चैत्र नवरात्र और गुड़ी पड़वा होता है। धार्मिक मान्यता के अनुसार, इस दिन ब्रह्मा जी ने सृष्टि की रचना की थी और इसी दिन मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम और धर्मराज युधिष्ठिर का राज्याभिषेक भी हुआ था।

- ज्योत्स्ना कक्षा - आठवीं

धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे - युगे ...

{भगवान महावीर जयन्ती १० अप्रैल पर विशेष}

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ।।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ।।

- श्रीमद्भगवद्गीता ४ / ७ - ८

धर्म प्रधान देश भारत में अनेक धर्म प्रवर्तकों ने जन्म लिया है। इन धर्म प्रवर्तकों को भगवान की संज्ञा देना असंगत नहीं होगा। श्री कृष्ण द्वारा कहे गए उपरोक्त श्लोकों के आधार पर ये महात्मा ईश्वरीय अवतार से किसी अर्थ में कम सिद्ध नहीं होते। महावीर स्वामी का जन्म उस समय हुआ जब यज्ञों का महत्व बढ़ने के कारण केवल ब्राह्मणों की ही प्रतिष्ठा समाज में लगातार बढ़ती जा रही थी। पशुओं की बलि देने से यज्ञ विधान भ्रष्ट हो रहे थे, उस समय जैन समाज मन ही मन पीड़ित था क्योंकि ब्राह्मणवादी चेतना सभी जातियों को ही हीन समझ रही थी। कुछ समय बाद तो समाज में धर्म आडंबर बनकर सभी अन्य जातियों को दबाने लगा।

ब्राह्मण जाति गर्वित होकर अन्य जातियों को पीड़ित करने लगी, इसी समय दैवीय कृपा से महावीर स्वामी धर्म के सच्चे स्वरूप को समझाने के लिए और परस्पर भेदभाव की गहराई को भरने के लिए सत्यस्वरूप में इस पावन भारत भूमि पर प्रकट हुए। महावीर स्वामी का जन्म आज से लगभग २५०० वर्ष पूर्व बिहार राज्य में वैशाली के कुंड ग्राम में लिच्छवी वंश में हुआ था। उनके पिता श्री सिद्धार्थ वैशाली के क्षत्रिय शासक थे। उनकी माता श्रीमती त्रिशला देवी धर्मपरायण भारतीय महिला की साक्षात प्रतिमूर्ति थीं।

बाल्यावस्था में महावीर स्वामी का नाम वर्धमन था। किशोरावस्था में एक भयंकर नाग तथा मदमस्त हाथी को वश में कर लेने के कारण ये महावीर के नाम से पुकारे जाने लगे थे। यद्यपि इनको पारिवारिक सुखों की कोई कमी न थी लेकिन ये पारिवारिक सुख इन्हें आनंद और सुख न देकर दु:खों एवं कांटों के समान चुभने लगे थे। ये बहुत ही दयालु और कोमल स्वभाव के थे। अत: प्राणियों के दु:ख को देखकर संसार से विरक्त रहने लगे। युवावस्था में इनका विवाह एक सुंदर राजकुमारी से हो गया। फिर भी ये गृहस्थ जीवन में बंधे नहीं, अपितु इनका मन संसार से और अधिक उचकता चला गया। २८ वर्ष की आयु में उनके पिताजी का स्वर्गवास हो गया। इससे इनका विरक्त मन और खिन्न हो गया। ये इसी समय संसार से वैराग्य लेने के लिए चल पड़े थे, लेकिन बड़े भाई नंदिवर्धन के आग्रह पर ०२वर्ष और गृहस्थ जीवन में जैसे तैसे काट दिए। इन दो वर्षों के भीतर महावीर स्वामी ने मनचाही दान दक्षिणा दी लगभग ३० वर्ष की आयु में उन्होंने संन्यास पद को अपना लिया। इन्होंने इस पद के लिए गुरुवर पार्श्वनाथ का अनुयायी बनकर लगभग १२ वर्षों तक अनवरत कठोर साधना की थी। इस विकट तपस्या के फलस्वरुप इनको सच्चा ज्ञान प्राप्त हुआ। अब ये जंगलों की साधना छोड़कर शहरों में जनमानस को विभिन्न प्रकार के ज्ञान उपदेश देने लगे। इन्होंने लगभग ४० वर्षों तक बिहार प्रांत के उत्तर दक्षिण स्थान में अपने मत का प्रचार कार्य किया। इस समय उनके अनेक शिष्य बनते गए और वे सभी उनके सिद्धांत- मतों का प्रचार्य कार्य करते गए।

महावीर स्वामी ने जीवन का लक्ष्य केवल मोक्ष प्राप्ति माना है। इन्होंने अपनी ज्ञान- किरणों के द्वारा जैन धर्म का परिवर्तन किया। जैन धर्म के पांच मुख्य सिद्धांत हैं :- सत्य, अहिंसा, चोरी न करना, आवश्यकता से अधिक संग्रह न करना और जीवन में शुद्ध आचरण। इन पांचो सिद्धांतों पर चलकर ही मनुष्य मोक्ष प्राप्त कर सकता है। महावीर स्वामी ने सभी मनुष्यों को इस पथ पर चलने का ज्ञानोपदेश दिया है। महावीर स्वामी ने यह भी उपदेश दिया की जाति-पाँति से कोई श्रेष्ठ नहीं बनता है, इसलिए मानव मात्र के प्रति प्रेम और सद्भावना की स्थापना का ही उद्देश्य मनुष्य को अपने जीवन उपदेश के रूप में अपनाना चाहिए। सबकी आत्मा को अपनी आत्मा के ही समान समझना चाहिए, यही मनुष्यता है।

भगवान महावीर स्वामी जैन धर्म के २४वें तीर्थंकर के रूप में आज भी सश्रद्धा पूजनीय और आराध्य हैं। यद्यपि उनकी मृत्यु ७२ वर्ष की आयु में पावापुरी नामक स्थान पर बिहार राज्य में हुई, लेकिन आज भी ये धर्म- प्रवर्तक के रूप में किए गए महान कार्यों के कारण प्राप्त यश- काया से हमारे अज्ञानरूपी अंधकार को दूर कर रहे हैं ।

- कलिका त्रिवेदी, १०वीं "अ"

सूक्तिमालिका

नैतिक शिक्षा तथा जीवन- मूल्यों की सूक्तियां

१. हतं ज्ञानं क्रियाहीनम्
कर्तव्यहीन ज्ञान व्यर्थ है। **- चाणक्य नीति**

२. हस्तस्य भूषणं दानम्
हाथ का भूषण दान है।
- सुभाषितरत्नभांडागार:

३. हितं मनोहारि च दुर्लभं वच:
हितकर भी हो और मधुर भी हो ऐसा वचन दुर्लभ होता है। **- किरातार्जुनीयम्**

४. स देश: प्रवरो यत्र कुटुंबभरणं भवेत्
वही देश उत्तम है जहां परिवार का भरण-पोषण हो सके। **- सुभाषितनिधि:**

५. सत्यं न तद् यच्छलनानुविद्धम्
वह सत्य नहीं जो छल- कपट से युक्त हो।
- महाभारत

६. स्तोत्रं कस्य न तुष्टये
प्रशंसा करने से कौन प्रसन्न नहीं होता ?
- कुमारसम्भवम्

७. स्नेह: खलु पापाशंकी
जहां स्नेह होता है वहां अशुभ की आशंका बनी रहती है । **- अभिज्ञानशाकुंतलम्**

८. यश: पुण्यैरवाप्यते
अच्छे काम करने से यश प्राप्त होता है।
- चाणक्य नीति

९. धारयध्वं परस्परम्
एक दूसरे की सहायता और रक्षा करो।
- महाभारत

१०. विनयाद् याति पात्रताम्
विनय से मनुष्य पात्रता को प्राप्त होता है।
- हितोपदेश

नैतिक शिक्षा - श्लोक:

समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः।
शीतोष्णसुखदुःखेषु समः सङ्गविवर्जितः ॥

– श्रीमद्भगवद्गीता– १२.१८

अर्थात् - उभगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि - जो शत्रु - मित्र में और मान-अपमान में सम है तथा सर्दी, गर्मी और सुख-दुःखादि द्वंद्वों में सम है और आसक्ति से रहित है।

अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि भारत ।
अव्यक्तनिधनान्येव तत्र का परिदेवना ।।

– गीता २/२८

अर्थात् - हे अर्जुन ! सभी प्राणी जन्मसे पहले अप्रकट थे और मरनेके बाद अप्रकट हो जायँगे, केवल बीचमें ही प्रकट दीखते हैं। अतः इसमें शोक करनेकी बात ही क्या है?

अनन्तपारं किल शब्दशास्त्रम्
स्वल्पं तथायुर्बहवश्च विघ्नाः।
सारं ततो ग्राह्यमपास्य फल्गु
हंसैर्यथा क्षीरमिवाम्बुमध्यात्।

अर्थात् - आयु थोड़ी है और पठनीय साहित्य असीम हैं तथा विघ्न भी अनेक प्रकार से आ जाते हैं।अतः जिस प्रकार हंस जल में से दूध का अंश ग्रहण कर लेता है और जल छोड़ देता है ठीक उसी प्रकार व्यर्थ का साहित्य छोड़कर साररूप को ग्रहण करना चाहिए ।

सद्भिरेव सहासीत सद्भिः कुर्वीत सङ्गतिम् ।
सद्भिर्विवादं मैत्री च नासद्भिः किञ्चिदाचरेत् ।।

अर्थात् - सज्जनों के साथ बैठना चाहिए। सज्जनों के संग में रहना चाहिए। सज्जनों से सलाह, वाद-विवाद और मित्रता करनी चाहिए। दुष्टों के साथ किसी भी प्रकार का व्यवहार नहीं करना चाहिए। क्योंकि हम जैसे लोगों की संगति में रहते हैं,उसका प्रभाव हमारे जीवन पर अवश्य पड़ता है। अतः सदैव संस्कारित और सज्जन लोगों के बीच बैठना चाहिए।

मधुरं संस्कृतम् - उपसर्ग : - २२

शब्द अथवा धातु के पहले जुड़कर उनके अर्थ में विशेषता उत्पन्न करने वाले अथवा अर्थ में परिवर्तन करके नए शब्द की रचना करने वाले शब्दांशों को उपसर्ग कहते हैं। संस्कृत में कुल 22 उपसर्ग माने जाते हैं - " प्र, परा, अप, सम् , अनु, अव, निस् , निर् , दुस् , दुर् , वि, आ, नि, अधि, अपि, अति, सु, उत्, अभि, प्रति, परि, उप"।

उपसर्ग धातु से पहले तथा प्रत्यय धातु के बाद जोड़े जाते हैं। उपसर्ग युक्त होने पर धातु के अर्थ में परिवर्तन हो जाता है, जैसे वदति का अर्थ है बोलता है किंतु इसमें अनु उपसर्ग जोड़ने से अनु वदति बनता है जिसका अर्थ होता है अनुवाद करता है। प्रति उपसर्ग जोड़ने पर प्रतिवदति बनता है जिसका अर्थ है- उत्तर देता है। नीचे कुछ उपसर्गों को धातुओं के साथ जोड़कर निर्मित रूप दिए जा रहे हैं , यथा :-

गम् - (गच्छ) गच्छति = जाता है ।
संगच्छति = साथ जाता है ।
अनुगच्छति = पीछे जाता है ।
निर्गच्छति = निकलता है ।
प्रत्यागच्छति = वापस लौटता है।
आगच्छति = आता है।
अवगच्छति = समझता है ।
उद्गच्छति = उत्पन्न होता है।

नी - (नय्) नयति = ले जाता है।
आनयति = लाता है।
अपनयति = दूर करता है।
अनुनयति = अनुनय करता है।

पत् - पतति = गिरता है।
उत्पतति = उड़ता है।

हृ : हरति = हरण करता है।
प्रहरति = प्रहार करता है।
विहरति = विहार करता है।
उद्धरति = उद्धार करता है।
संहरति = संहार करता है।
परिहरति = दूर करता है।

स्था - तिष्ठति = ठहरता है।
उत्तिष्ठति = उठता है।
उपतिष्ठति = समीप रहता है।

कृ - करोति = करता है।
अपकरोति = अपकार करता है।
उपकरोति = उपकार करता है।
अनुकरोति = नकल करता है।
अधिकरोति = अधिकार करता है। इत्यादि...

प्रेरणास्पद शिक्षाप्रद कहानी नवसंवत्सर की...

चिंटू नामक एक लड़का अपने घर गया, तो उसने देखा कि उसका संपूर्ण घर सजावट और हर्षों उल्लास से भरा हुआ था। सभी लोग आपस में बातचीत कर रहे थे और साथ ही साथ अत्यंत स्वादिष्ट व्यंजनों का आनंद उठा रहे थे।

चिंटू को यह त्यौहार भरा माहौल देखकर अत्यंत अचंभा हुआ। उसने जाकर अपनी माँ से पूछा, "माँ ! क्या आज कोई विशेष त्यौहार है?" माँ ने उत्तर दिया, "हाँ चिंटू, आज भारतीय पंचांग के अनुसार नववर्ष है।"

चिंटू ने अत्यंत आश्चर्य से कहा, "वह नववर्ष तो पहली जनवरी को आता है। मुझे तो कुछ समझ नहीं आ रहा है।" तभी दादाजी वहां आए और उन्होंने चिंटू को समझाते हुए कहा, "चिंटू, आओ मैं तुम्हें समझता हूं कि नववर्ष आज के दिन क्यों मनाया जाता है।"

चिंटू ने बोरियत से कहा, "नहीं दादाजी, ऐसा कीजिए, कई दिन हो गए हैं आपने मुझे कोई रोमांचक कहानी नहीं सुनाई है। कृपया कर, मुझे एक अत्यंत ज्ञानवर्धक और रोमांचक कहानी सुनाइए।"

दादाजी ने मुस्कुराते हुए कहा, "ठीक है चिंटू, आओ मैं तुम्हें आज चंद्रमा मामा की एक कहानी सुनाता हूं।" दादाजी ने जैसे ही अपनी कहानी शुरू की, चिंटू ने अपने आंख कान खोल लिए और दादाजी की बात बड़ी एकाग्रता से सुनने लगा। दादाजी ने कहानी सुनाते हुए कहा, "चंद्रमा मामा की २७ बेटियां थीं, जिनमें से चित्रा सबसे सर्वश्रेष्ठ थी। वह ऊर्जा से भरी हुई थी और यह देखकर सब उससे प्रभावित थे। उसकी प्रखर बुद्धि थी और उसकी ऊर्जा देखकर स्वयं चंद्रमा भी प्रभावित थे। "प्रत्येक वर्ष चैत्र माह में सूर्य चाचा चित्रा से भेंट करने आते थे, क्योंकि वह भी उनकी ऊर्जा से अत्यंत प्रभावित थे। इसलिए चित्रा के नाम से भारतवासी चैत्र माह को अपना नववर्ष मानने लगे।"चिंटू के पिताजी ने अवरोध करते हुए कहा, "अरे चिंटू, तुम्हें तो दादाजी ने अत्यंत रोमांचक कहानी सुनाई।" चिंटू ने कहा, "सत्य कहा पिताजी, यह कहानी तो अत्यंत मनोरंजक थी।"

तभी चिंटू के पिताजी ने कहा, "चिंटू, आओ अब मैं तुम्हें इसके पीछे का वैज्ञानिक कारण बताता हूं, जिससे तुम्हें यह बात और अच्छे से समझ आ जाएगी।"

"भारतीय पंचांग के अनुसार नववर्ष चैत्र मास शुक्ल पक्ष प्रतिपदा को मनाया जाता है। यह वैज्ञानिक आधार पर आधारित है, क्योंकि सूर्य इस समय पहले राशि मेष राशि में प्रवेश करता है और चंद्रमा चित्रा नक्षत्र में होता है इसलिए भारतीय पंचांग के अनुसार चित्रा नक्षत्र के नाम पर चैत्र माह से नव वर्ष का शुभ आरंभ माना जाता है।

इसके पश्चात चिंटू ने कहा,"धन्यवाद पिताजी और दादाजी, अब मुझे सब कुछ पूर्ण रूप से समझ आ गया है।

इसके अतिरिक्त सभी लोगों ने चिंटू के साथ बातचीत करते हुए और अत्यंत कहानी और किस्से आपस में बताते हुए नव वर्ष का अत्यंत आनंद उठाया। आपसभी को भारतीय नव वर्ष विक्रम संवत २०८२ की हार्दिक मंगलमय शुभकामनाएं। सर्वे भवन्तु सुखिन: ...।

- अन्विता मिश्रा , कक्षा - सातवीं
ज्ञान भारती स्कूल, साकेत, नई दिल्ली

विक्रम संवत २०८२ भारतीय नव वर्ष

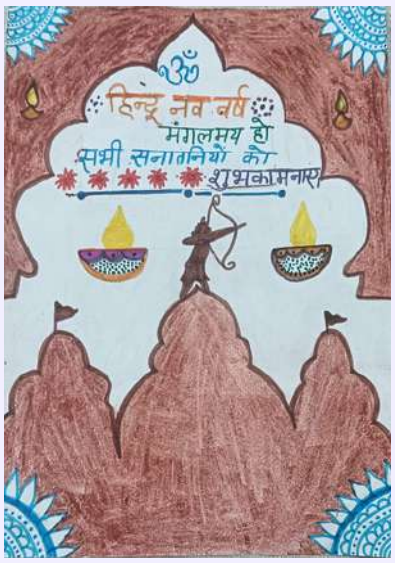

भारतीय नव वर्ष "चैत्र शुक्ल प्रतिपदा" विक्रम संवत् के अनुसार एक अत्यंत महत्वपूर्ण तिथि है, जो भारतीय सांस्कृतिक और आध्यात्मिक परंपराओं में विशेष स्थान रखती है। विक्रम संवत् की शुरुआत चैत्र मास की शुक्ल प्रतिपदा (यानी चैत्र महीने के शुक्ल पक्ष का पहला दिन) से होती है। यह तिथि आमतौर पर मार्च-अप्रैल महीने में आती है। इस दिन से प्राकृतिक नवचेतना की शुरुआत मानी जाती है — वसंत ऋतु का आगमन, नई कोपलों का फूटना, फूलों का खिलना और खेतों में नई फसल का आगमन।

विक्रम संवत् की स्थापना राजा विक्रमादित्य ने की थी, जिन्होंने शकों को पराजित कर इस युग की शुरुआत की। यह संवत् ईसा पूर्व ५७ वर्ष में शुरू हुआ। यह संवत् हिन्दू पंचांग का सबसे प्रमुख और मान्य संवत् है। इस दिन को सृष्टि की रचना का दिन भी माना जाता है — कहा जाता है कि ब्रह्मा जी ने इसी दिन सृष्टि की रचना प्रारंभ की थी।

नवरात्रि की शुरुआत भी इसी दिन से होती है, जो शक्ति की उपासना का पर्व है।

देश के विभिन्न हिस्सों में इसे अलग-अलग नामों से मनाया जाता है, जैसे - गुड़ी पड़वा (महाराष्ट्र) उगादी (आंध्र प्रदेश, कर्नाटक) चेटी चांद (सिंधी समुदाय) नवरेह (कश्मीर)

यह भारतीय परंपरा और नवचेतना का पर्व होता है।

यह दिन केवल कालगणना का प्रारंभ नहीं, बल्कि आत्मिक नव आरंभ का प्रतीक भी है। लोग इस दिन साफ-सफाई, पूजन, और धार्मिक अनुष्ठानों के माध्यम से नए वर्ष का स्वागत करते हैं। यह समय आत्मनिरीक्षण, संकल्प, और सकारात्मकता का होता है।

तुल्यनिन्दास्तुतिर्मोनी सन्तुष्टो येन केनचित् ।
अनिकेतः स्थिरमति - र्भक्तिमान्मे प्रियो नरः ॥

- (श्रीमद्भगवद्गीता- १२.१९)

अर्थात् - श्री भगवान बोले- जो निंदा-स्तुति को समान समझने वाला, मननशील और जिस किसी प्रकार से भी शरीर का निर्वाह होने में सदा ही संतुष्ट है और रहने के स्थान में ममता और आसक्ति से रहित है- वह स्थिरबुद्धि भक्तिमान पुरुष मुझको प्रिय है।

- श्रेया नगरकोटी, कक्षा - ८ वीं

भारतीय नव वर्ष २०८२ शुभं भवतु...

वक्रतुंड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभः ।
निर्विघ्न करूमे देव सर्वकार्यषु सर्वदा ॥

प्रचलित मान्यता के अनुसार उज्जैन के राजा चंन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने चैत्र शुक्ल प्रतिपदा विक्रम संवत भारतीय नव वर्ष की स्थापना की थी । विक्रम संवत अंग्रेजी कैलेंडर से ५७ वर्ष आगे चलता है । विक्रम संवत में चान्द्र मास एवं सौर नाक्षत्र वर्ष का उपयोग किया जाता है । द्वादश मासाः वस्तरः अर्थात द्वादश मास का काल विशेष बह्मपुराण के अनुसार जगत पिता ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ही की थी इस दिन देवी-देवताओं , यक्ष-राक्षसों , गंधर्वो , ऋषि-मुनियों , मनुष्यों , नदियों- पर्वतों , पशु-पक्षियों और कीटाणुओं की नही बल्कि रोगों और उनके उपचारों तक की पूजा की जाती है इसका विधिपूर्वक पूजन करने से वर्ष पर्यन्त सुख-शांति, समृद्धि आरोग्यता बनी रहती है । चैत्र मास की शुक्ल प्रतिपदा को महाराष्ट्र में गुड़ी पड़वा कहा जाता है । गुड़ी का अर्थ विजय होता है । आप सभी को विक्रम संवत नूतन सम्वत्सर २०८२ के साथ श्री रामनवमी की मंगलमय शुभकामनाएं.....।

रामोऽवतारः सूर्यस्य चन्द्रस्य यदुनायकः।
नृसिंहो भूमिपुत्रस्य बुद्धः सोमसुतस्य च।।
वामनो विबुधेज्यस्य भार्गवो भार्गवस्य च।
कूर्मो भास्करपुत्रस्य सैंहिकेयस्य सूकरः।।
केतोर्मीनावतारश्च ये चान्ये तेऽपि खेटजाः।
परमात्मांशमधिकं येषु ते च वै खेचराभिधाः।।

- (बृहत्पाशरहोराशास्त्र, अवतारवाद - २७-२९)

अर्थात् - अवतार के सम्बन्ध मे मैत्रेय जी के प्रश्नों के उत्तर देते हुए पराशर ऋषि कहते हैं - सूर्य से रामावतार, चन्द्र से कृष्णावतार, मंगल से नृसिंहावतार, बुध से बौद्धावतार, बृहस्पति से वामन अवतार, शुक्र से परशुराम अवतार, शनि से कूर्म अवतार, राहु से सूकर अवतार, केतु से मत्स्य अवतार हुए हैं। अन्य अवतार भी ग्रहों से ही हुए हैं। जिनमे परमात्मांश अधिक हैं, वे खेचर अर्थात देवता कहे जाते हैं।

श्रीरामनवमी, मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के अवतरण-महामहोत्सव की अनेक-अनेक शुभकामनाएं ।

- खुशी , कक्षा - पंचम

हमारे सनातन धर्मग्रन्थ...

हमारे सनातन धर्म के पवित्र ग्रन्थों को दो भागों में बाँटा गया है- श्रुति और स्मृति।

श्रुति हिन्दू धर्म के सर्वोच्च ग्रन्थ हैं, जो पूर्णत: अपरिवर्तनीय हैं, अर्थात् किसी भी युग में इनमें कोई बदलाव नहीं किया जा सकता। स्मृति ग्रन्थों मे देश-कालानुसार बदलाव हो सकता है।

श्रुति के अन्तर्गत चार वेद आते हैं : - ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद और ब्रह्मसूत्र व उपनिषद् आते हैं। वेद श्रुति इसलिये कहे जाते हैं क्योंकि हिन्दुओं का मानना है कि इन वेदों को परमात्मा ने ऋषियों को सुनाया था, जब वे गहरे ध्यान में थे। वेदों को श्रवण परम्परा के अनुसार गुरू द्वारा शिष्यों को दिया जाता था। हर वेद में चार भाग हैं- संहिता -- मन्त्र भाग, ब्राह्मण-ग्रन्थ -- गद्य भाग, जिसमें कर्मकाण्ड समझाये गये हैं, आरण्यक -- इनमें अन्य गूढ बातें समझायी गयी हैं, उपनिषद् -- इनमें ब्रह्म, आत्मा और इनके सम्बन्ध के बारे में विवेचना की गयी है। अगर श्रुति और स्मृति में कोई विवाद होता है तो श्रुति ही मान्य होगी। श्रुति को छोड़कर अन्य सभी हिन्दू धर्मग्रन्थ स्मृति कहे जाते हैं, क्योंकि इनमें वो कहानियाँ हैं जिनको लोगों ने पीढ़ी दर पीढ़ी याद किया और बाद में लिखा। सभी स्मृति ग्रन्थ वेदों की प्रशंसा करते हैं। इनको वेदों से निचला स्तर प्राप्त है, पर ये ज़्यादा आसान हैं और अधिकांश हिन्दुओं द्वारा पढ़े जाते हैं। प्रमुख स्मृतिग्रन्थ हैं:- इतिहास--रामायण और महाभारत, श्रीभगवद्भगवद्गीता, पुराण--(१८), मनुस्मृति, धर्मशास्त्र और धर्मसूत्र, आगम शास्त्र। भारतीय दर्शन के ६ प्रमुख अंग हैं- साँख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदान्त।

- संकलितम्

लिङ्गाष्टकम्...

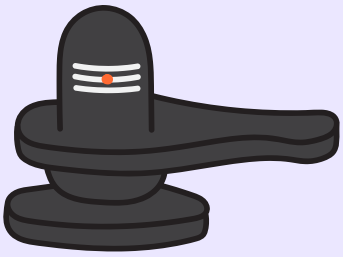

ब्रह्ममुरारिसुरार्चितलिङ्गं निर्मलभासितशोभितलिङ्गम् ।
जन्मजदुःखविनाशकलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥१॥

देवमुनिप्रवरार्चितलिङ्गं कामदहं करुणाकरलिङ्गम् ।
रावणदर्पविनाशनलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥२॥

सर्वसुगन्धिसुलेपितलिङ्गं बुद्धिविवर्धनकारणलिङ्गम् ।
सिद्धसुरासुरवन्दितलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥३॥

कनकमहामणिभूषितलिङ्गं फणिपतिवेष्टितशोभितलिङ्गम् ।
दक्षसुयज्ञविनाशनलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥४॥

कुङ्कुमचन्दनलेपितलिङ्गं पङ्कजहारसुशोभितलिङ्गम् ।
सञ्चितपापविनाशनलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥५॥

देवगणार्चितसेवितलिङ्गं भावैर्भक्तिभिरेव च लिङ्गम् ।
दिनकरकोटिप्रभाकरलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥६॥

अष्टदलोपरिवेष्टितलिङ्गं सर्वसमुद्भवकारणलिङ्गम् ।
अष्टदरिद्रविनाशितलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥७॥

सुरगुरुसुरवरपूजितलिङ्गं सुरवनपुष्पसदार्चितलिङ्गम् ।
परात्परं परमात्मकलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥८॥

लिङ्गाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेत् शिवसन्निधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥

भारतीय गणना

1 - इकाई
10 - दहाई
100 - सैकड़ा
1,000 - हजार
10,000 - दस हजार
100,000 - लाख
1,000,000 - दस लाख
10,000,000 - करोड़
100,000,000 - दस करोड़
1,000,000,000 - अरब
10,000,000,000 - दस अरब
100,000,000,000 - खर्ब
1,000,000,000,000 - दस खर्ब
10,000,000,000,000 - नील
100,000,000,000,000 - दस नील
1,000,000,000,000,000 - पद्म
10,000,000,000,000,000 - महा पद्म
100,000,000,000,000,000 - शंख
1,000,000,000,000,000,000 - महा शंख
10,000,000,000,000,000,000 - अंत्या
100,000,000,000,000,000,000 - महा अंत्या
1,000,000,000,000,000,000,000 - मध्य
10,000,000,000,000,000,000,000 - महा मध्य
100,000,000,000,000,000,000,000 - पारस्व
1,000,000,000,000,000,000,000,000 - महा पारस्व
10,000,000,000,000,000,000,000,000 - ध्रुव
100,000,000,000,000,000,000,000,000 - महा ध्रुव
1,000,000,000,000,000,000,000,000,000 - असंख्यिणी
10,000,000,000,000,000,000,000,000,000 - महा असंख्यिणी

भारत माँ का आँचल अपना देवभूमि उत्तराखंड

{ज्ञान - शतकम्}

ॐ. उत्तराखंड की द्वितीय राजभाषा क्या है ? - संस्कृत

१. स्कन्द पुराण में गढ़वाल के लिए प्रयुक्त नाम क्या है ? – केदारखण्ड
२. अशोक कालीन शिलालेख राज्य के किस स्थान से मिला है ? – कालसी
३. कुमाऊँ में गोरखा शासन कब स्थापित हुआ था ? – १७९० में
४. कटारमल मन्दिर विशेष रूप से किस देवता से सम्बंधित है ? – सूर्य
५. वह मुगल शाहजादा जिसने श्रीनगर गढ़वाल में आश्रय लिया था ? – सुलेमान शिकोह
६. टिहरी राज्य किस तिथि को उत्तर प्रदेश में सम्मिलित हुआ ? – १ अगस्त १९४९
७. उत्तराखंड के किस जिले में सर्वाधिक गांव हैं ? – पौड़ी
८. 'साल्ट' की घटना किस वर्ष हुई? – ५ सितम्बर १९४२
९. 'अल्मोड़ा अखबार' का प्रकाशन किस वर्ष में शुरू हुआ ? – १८७१
१०. महात्मा गांधी ने 'अनाशक्ति योग टीका' कहाँ लिखी थी ? – कौसानी
११. चम्पावत स्थित राजबुंगा किला किसने बनवाया था ? – सोमचंद्र
१२. कार्तिकेयपुर राजवंश की राजभाषा क्या थी ? – संस्कृत

१३. गांवों में ग्राम प्रधान/मुखिया नियुक्ति की प्रणाली किसके द्वारा शुरू हुई ? – चन्द्रों द्वारा
१४. उत्तराखण्ड पर शासन करने वाली प्रथम राजनीतिक शक्ति 'कुणिन्द्र ' किसके समकालीक थे ? – मौर्यों के
१५. तपोवन में किसने तपस्या की थी ? – लक्ष्मण ने
१६. कुमाऊँ परिषद् का कांग्रेस में विलय कब हुआ ? – १९२६ में
१७. कुमाऊँ में अल्मोड़ा कांग्रेस की स्थापना किस वर्ष में हुई थी ? – सन् १९१२ ई.
१८. कोटा खर्रा का आन्दोलन किसके हित में था ? – भूमिहिनों के
१९. राजनीतिक जागरूकता हेतु अल्मोड़ा में डिबोटिंग क्लब की स्थापना कब की गई थी ? – १८७० में
२०. चनौदा (सोमेश्वर अल्मोड़ा) में शांतिलाल त्रिवेदी के प्रयास से गाँधी आश्रम की स्थापना कब की गई ? – १९३७ में
२१. राज्य-पक्षी मोनाल का प्रिय आहार क्या है ? – आलू
२२. उत्तराखण्ड में कांचुलखर्क किसका केन्द्र है ? – कस्तूरी मृग संरक्षण एवं प्रजनन केन्द्र

२३. राज्य पुष्प ब्रह्मकमल की उत्तराखण्ड में कितनी प्रजातियां पायी जाती हैं ? – २४
२४. राज्य वृक्ष बुराँस में फूल लगने का समय कौन सा है ? – फरवरी से अप्रैल
२५. उत्तराखंड राज्य में कुल कितने जिले हैं ? – १३
२६. किस स्थान से भागीरथी को गंगा के नाम से जाना जाता है ? – देव प्रयाग
२७. किस जिले में प्राकृतिक झीलों की संख्या सर्वाधिक है ? – चमोली
२८. रुद्रप्रयाग, चम्पावत व बागेश्वर जिले कब सृजित किये गये ? – १९९७ में
२९. २०११ के अनुसार उत्तराखंड में सबसे कम जनघनत्व वाला जिला कौन सा है ? – उत्तरकाशी
३०. गढ़वाल मण्डल का मुख्यालय क्या है ? – पौढ़ी
३१. हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय को केन्द्रीय विश्वविद्यालय का दर्जा कब मिला ? – १५ जनवरी २००९
३२. गौरादेवी के नाम से कौन-सी योजना प्रसिद्ध है ? – कन्या धन योजना
३३. पहाड़ों की रानी (मसूरी) किस श्रेणी का अंग है ? – मध्य हिमालय श्रेणी
३४. रानी खेत पर्वत श्रेणी कहां स्थित है ? – मध्य हिमालय में
३५. लघु हिमालय किसके मध्य में स्थित हैं? – शिवालिक और महा हिमालय के
३६. राज्य में आपातकालीन चिकित्सा सेवा योजना १०८ कब शुरू की गई ? – २००८ में
३७. विकलांग लोगों को सरकारी सेवाओं में कितने प्रतिशत आरक्षण की व्यवस्था है? – ३%
३८. किस झील का पानी लाल है ? – बासुकी ताल
३९. गढ़वाल क्षेत्र का सबसे बड़ा और गहरा ताल है ? – सहस्त्रताल
४०. कुमाऊँ क्षेत्रका सबसे बड़ा ताल है ? – भीमताल
४१. उत्तराखंड में काँचुला खरक है ? – एक कस्तूरी मृग प्रजनन केन्द्र
४२. उत्तराखंड में जड़ी-बूटियों की प्राप्त होने वाली किस्में लगभग कितनी हैं ? – ५००
४३. १०८ आपातकालीन चिकित्सा सेवा किसके नाम पर है ? – पं. दीन दयाल उपाध्याय
४४. चिपको आन्दोलन में १९७४ में रेणी गांव की महिलाओं का नेतृत्व करने वाली महिला कौन थी ? – गौरा देवी
४५. उत्तराखंड में कौन वृक्ष मानव के नाम से प्रसिद्ध है ? – विशेस्वर दत्त सकलानी
४६. उत्तराखंड में लगभग कुल कितने प्रकार के औषधीय पौधे पाये जाते हैं ? – ५००
४७. चरक संहिता में उत्तराखंड क्षेत्र को क्या कहा गया है ? – वानस्पतिक बगीचा
४८. प्रसिद्ध पुस्तक 'मसूरी मेडले' के लेखक कौन हैं ? – प्रो. गणेश शैली
४९. 'हिमालय बचाओ देश बचाओं' का नारा किसने दिया था ? – सुन्दर लाल बहुगुणा ने
५०. वनों के नीलामी के विरोध में राज्य स्तरीय आन्दोलन कब से कब तक चला ? – १९७७ - ७८
५१. कौन सा दो वर्षीय फसल चक्र उत्तराखंड के वर्षा आश्रित क्षेत्रों में लोकप्रिय है ? – धान-गेहूँ-मडुवा-पड़ती
५२. उत्तराखंड में 'भकार' का उपयोग किसमें होता है ? – खाद्यान्न संग्रह

५३. २०११ के अनुसार उत्तराखंड राज्य के कितने जिलों की जनसंख्या १० लाख से अधिक है ? – ०३
५४. ऊपरी गंगा नहर का उद्भव स्थान कहां है ? – हरिद्वार
५५. विकेट बन्दोबस्त कब हुआ था ? – १८६३ -७३ में
५६. उत्तराखंड के शुद्ध सिंचन क्षमता में किसका सर्वाधिक योगदान है ? – नलकूपों का
५७. जोशीमठ औली रोप वे कब शुरू किया गया ? – अक्टूबर १९९३ में
५८. कौन सी नदी केदारनाथ से रुद्र प्रयाग होते बहती है ? – मन्दाकिनी
५९. बद्रीनाथ मन्दिर कहां स्थित है ? – चमोली में
६०. उत्तराखण्ड का सबसे बड़ा हिमनद कौन सा है ? – गंगोत्री
६१. हरिद्वार की अधिष्ठात्री देवी का क्या नाम है ? – माया देवी
६२. प्रसिद्ध पर्यटन स्थल खिरसू कहां स्थित है ? – पौढ़ी में
६३. कटारमल सूर्य मंदिर की वास्तु शैली किस तरह की है ? – उत्तराखण्ड शैली
६४. चितई मंदिर कहां स्थित है ? – अल्मोड़ा

६५. पर्यटको को सर्वाधिक आर्कषित करने वाला राष्ट्रीय उद्यान कार्बेट है। इस दृष्टि से दूसरे स्थान पर कौन सा उद्यान है ? – राजाजी राष्ट्रीय उद्यान
६६. 'गढ़वाल पेंटिंग' किसकी रचना है ? – मुकुन्दी लाल
६७. यमुनोत्री किस राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या पर स्थित है ? – ९४ पर
६८. गढ़वाल क्षेत्र में थडिया नृत्य कब किया जाता है ? – महिला के प्रथम बार मायके आने पर
६९. झाल, बिणाई, दमामा तथा मुरयों क्या है ? – कुमायूँ के वाद्ययंत्र
७०. गढ़वाली चित्रकला के प्रसिद्ध चित्रकार कौन थे ? – मोलाराम
७१. उत्तराखंड को विशेष राज्य का दर्जा कब दिया गया है ? – १ अप्रैल २००१ से
७२. 'गंढ़वाल एनशीएन्ट एण्ड माडर्न' पुस्तक किसने लिखी थी ? – पातीराम ने
७३. राज्य में कर राजस्व का सबसे बड़ा कर स्त्रोत क्या है ? – वाणिज्य कर
७४. राज्य में वैट कब से लागू किया गया है ? – १ अप्रैल २००५ को
७५. २०११ के अनुसार राज्य में सबसे कम नगरीकृत जिला कौन सा है ? – बागेश्वर
७६. जौनसारी संगीत के जनक कौन हैं ? – नन्दलाल भारती
७७. राज्य के कितने जिलों में रेल-पथ बिछायें गये हैं ? – ६
७८. किस जनजाति द्वारा ऋतु प्रवास किया जाता है ? – भोटिया
७९. खुमरी नामक राजनीतिक संस्था किस जनजाति में पायी जाती थी ? – जौनसारी में
८०. किस जनजाति में विवाह की तीन 'टिकठी प्रथा' प्रचलित है ? – थारू में
८१. गंगोत्री किस राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या पर स्थित है ? – १०८ पर
८२. राज्य में सहकारी सहभागिता योजना कब से शुरू की गई है ? – १ मई २००५
८३. राज्य का सबसे छोटा राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या कौन सी है ? – ७२ अ (72 A)
८४. गोचर हवाई अड्डा कहां स्थित है ? – चमोली में
८५. राज्य पुलिस प्रशिक्षण अकादमी की स्थापना कहाँ की गई है ? – नरेन्द्रनगर में
८६. कुमाऊँ का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम सेनानी किसे माना जाता है ? – कालू महरा को
८७. गढ़ केशरी के नाम से प्रसिद्ध स्वतंत्रता संग्राम सेनानी कौन थे ? – अनुसूइया प्रसाद बहुगुणा
८८. किसे उत्तराखंड का गांधी कहा जाता है ? – इन्द्रमणि बडोनी को
८९. राज्य के एकमात्र भारत रत्न प्राप्त कर्ता कौन हैं ? – गोविन्द बल्लभ पंत
९०. कुमाऊँ रेजीमेंट का मुख्यालय आगरा से रानीखेत किस वर्ष लाया गया ? – १९४८ में
९१. राज्य में स्पर्श गंगा अभियान कब शुरू किया गया ? – १७ दिसम्बर, २००९ से
९२. गंगा को केन्द्र सरकार द्वारा राष्ट्रीय नदी कब घोषित किया गया ? – २००८ में
९३. देहरादून में भारतीय सैन्य अकादमी की स्थापना कब की गई ? – १९३२ में
९४. प्रतिष्ठि सैन्य शाखा 'बंगाल सैपर्स एवं माइनर्स का ग्रुप एवं सेन्टर' कहां स्थित है ? – हरिद्वार में
९५. ज्ञानपीठ पुरस्कार पाने वाले राज्य के प्रथम कवि का क्या नाम है ? – सुमित्रा नंदन पंत
९६. सबसे पहले विक्टोरिया क्रास विजेता सैनिक कौन था ? – दरवान सिंह नेगी
९७. राज्य में ई-डिस्ट्रिक्ट योजना कब शुरू की गई ? – २००९ से
९८. चिपको आन्दोलन का नेतृत्व किसने किया था ? – गौरादेवी ने
९९. हरिद्वार में "शान्ति कुंज" की स्थापना किसने की थी ? – पं. श्रीराम शर्मा ने
१००. नेहरू पर्वतारोहण संस्थान की स्थापना कहाँ की गई है ? – उत्तरकाशी में ।

- संकलन : - धर्मानन्द उनियाल देहरादून

Manava Bharati School
D- Block, Nehru Colony, Dehradun 248001 Uttarakhand
E-mail.com:- hr@mbs.ac.in, Website:- www.mbs.ac.in
Phone- 0135-2669306, 8171465265, (Dr. Anantmani Trivedi - 7351351098)
मानव भारती स्कूल देहरादून के लिए प्रसारित। केवल निजी प्रसार के लिए।
संपादक - डॉ. अनन्तमणि त्रिवेदी, डिजाइन - विशाल लोधा
आत्मानं विद्धि